

8. 208, 25. AK. 3, 2, 57. Jmd (acc.) anreden, mit Jmd sprechen: त्वं च — मादृशो न संभाषणार्हः । परं त्वतिथिवाञ्जल्पितः ÇUK. 41, 18. von Jmd (acc.) sprechen: इत्यजल्पन् — कीचकम् MBh. 4, 864. जल्पित n. Gerede, gesprochene Worte P. 3, 3, 114, Sch. H. c. 80. MBh. in BENF. Chr. 45, 14. R. 5, 10, 3. VARĀH. BṚH. S. 96, 6. BHATT. 8, 125. मिथ्याजल्पितमेतत् PAÑĀT. 133, 5. — 2) = अर्चति NAIGH. 3, 14. — caus. जल्पयति Jmd reden lassen P. 1, 4, 52, VArtt. 3. — Vgl. जप् und लप्.

— व्यति act. mit einander plaudern P. 1, 3, 15, VArtt. 4, Sch. Vop. 23, 55, 56.

— अनु hinterher reden: जल्पन्त्यामनुजल्पति Bhāg. P. 4, 25, 58. अन्योऽन्यमनुजल्पिरे sprachen zu einander HARIV. 12161.

— अभि 1) die Rede an Jmd richten: विवक्तुं समनुप्राप्तं किं च मां नाभिजल्पयः R. 4, 2, 16. अन्योऽन्यमभिजल्पतः शनैश्चक्रुः पृथक्कथाः 3, 1, 3. तेऽन्योऽन्यमभिजल्पिरे HARIV. 16283. Jmd erwidern: ये जत्तारे नाभिजल्पति चान्यान् MBh. 13, 4873. — 2) Etwas mit einer Anrede begleiten: दानमेव हि सर्वत्र साहचर्यानभिजल्पितम् । न प्रीणयति भूतानि निर्व्यञ्जनमिवाशनम् ॥ MBh. 12, 3189. — 3) einer Sache (acc.) das Wort reden, zu Etwas rathen: (केशवम्) हितार्थमभिजल्पतम् MBh. 7, 3033. नास्तिक्यमभिजल्पसि 12, 358. — 4) Etwas mit Jmd besprechen, festsetzen: तमर्थमभिजल्पत्याः कृत्वायाः कीचकेन MBh. 4, 711.

— उप, उपजल्पित n. Gerede R. 2, 60, 14. — Vgl. उपजल्पित्.

— परि schwätzen: अयुन्मतात्प्रलपतो बालाञ्च परिजल्पतः MBh. 5, 1125. über Etwas sprechen: पञ्चान्यत्परिजल्पय HARIV. 11301.

— प्र sprechen: चतुष्पादकृतो दोषो नापेक्षीति प्रजल्पतः Jāṅ. 2, 298. तत्किमेवं प्रजल्पसि PAÑĀT. IV, 21. नाशङ्कते प्रजल्पती I, 437. तदुपश्रुत्य — खेचराणां प्रजल्पताम् Bhāg. P. 4, 3, 5. द्वौ पुरुषौ — परस्परं प्रजल्पतावप्रपोत् PAÑĀT. 134, 6. तत्किं मिथ्या पुरुषाणि वचनानि प्रजल्पसि 164, 13. सेवा श्वत्त्रिाख्याता यैस्तैर्मिथ्या प्रजल्पतम् I, 300. mittheilen, verkünden: नेमं धर्मं यत्र तत्र प्रजल्पेत् MBh. 13, 3686. प्रजल्पित der zu sprechen begonnen hat: स्वरेण तस्याममृतमुतेव प्रजल्पितायाम् KUMĀRAS. 1, 46. n. Gerede, gesprochene Worte Hip. 1, 22.

— प्रति antworten, erwidern: सीतामप्रतिजल्पतीम् R. 6, 98, 12. किं मां न प्रतिजल्पयः 3, 75, 2. न चैवोक्ता न वानुक्ता कीनतो पुरुषा गिरः । भारत प्रतिजल्पति सदा तूत्तमपुरुषाः ॥ MBh. 2, 2423.

— वि aussprechen: परिक्रामविजल्पितं सखे परमार्थेन न गृह्यतां वचः ÇĀK. 51.

— सम् reden, sprechen: संगता मुनयः सर्वे संजल्पपुरयो मिथः R. 1, 74, 20. तथा संजल्पतस्तस्य — वाचः प्रुश्नाव MBh. 1, 5973. R. 5, 89, 21. संजल्पती सुमधुरम् MBh. 1, 6064. इति संजल्पमानानां प्रणवतौ पृथगीरितम् HARIV. 6330. संजल्पित n. Gerede, gesprochene Worte Bhāg. P. 1, 15, 18. pl. 4, 8, 24.

जल्प्य (von जल्प) m. gaṇa उच्चारि zu P. 6, 1, 160. Gerede, Gespräch, gesprochene Worte: जनस्य P. 4, 4, 97. ये तु निन्दन्ति जल्पेषु (ब्राह्मणान्) MBh. 13, 4322. इति प्रियो वल्गुविचित्रजल्प्येः स साहचर्यिवा Bhāg. P. 1, 7, 17. 16, 86. Auch neutr.: तूष्णीं भव न ते जल्पमिदं कार्यं कथं च न MBh. 1, 5066. कैकेयीसंश्रितं जल्पं नेदानां प्रतिभाति माम् R. 2, 60, 14. — 2) eine Disputation, bei der man kein Mittel scheut um seine Behauptung dem Gegner gegenüber aufrecht zu erhalten, Nāṅas. 1, 42. COLBBR. Misc. Ess.

I, 293. MADHUS. in Ind. St. 1, 18. Schol. zu ÇAT. Br. 14, 7, 4, 1 (1144, 7). — Vgl. चित्रजल्प.

जल्पक (wie eben) adj. geschwätzig BHATT. 2, 48. = Vgl. जल्पाक.

जल्पन (wie eben) 1) adj. redend, sprechend gaṇa नन्धादि zu P. 3, 1, 134. — 2) n. das Reden, Sprechen P. 3, 3, 115, Sch. VARĀH. BṚH. S. 45, 8. अर्थोचितं PAÑĀT. I, 193.

जल्पाक (wie eben) adj. f. ई geschwätzig P. 3, 2, 155. Vop. 26, 147. AK. 3, 1, 36. H. 347. BHATT. 7, 49. — Vgl. जल्पक.

जल्पि (wie eben) f. undeutliches Reden; Murren: मा नो निदा ईशितमेत जल्प्यैः RV. 8, 48, 14. नीकुरेण प्रावृता जल्प्या चामुत्प उक्थशासंश्रति 10, 82, 7. halblaute Unterredung: येषां जल्पिश्रत्यत्तरा तम् (स्वप्रम्) AV. 19, 56, 4.

जल्पितरू (wie eben) nom. ag. redend, sprechend: न बहुजल्पिता R. 5, 36, 63.

जल्पित् (wie eben) adj. redend, sprechend: अव्यक्तं MBh. 5, 2038.

जल्पिन् s. अच्युत.

जलालदीन् m. = جلال الدين (mit absichtlicher Entstellung des Ausgangs um das bedeutsame इन्द्र hineinzubringen) Verz. d. B. H. 368, 10. — Vgl. जलालदीनाककवरसाह.

जळ्ळ adj. Nir. 6, 25 erklärt durch ज्वलनेन कीनः, also wohl für verwandt mit जड angesehen: न पापासो मनामके नारायासो न जळ्ळवः RV. 8, 50, 11.

जव (von जू) 1) m. oxyt. ved., parox. klass. P. 3, 3, 57, 56, VArtt. 3. Eile, Raschheit, Schnelligkeit, Drang P. 6, 4, 28. AK. 1, 1, 4, 60, 3, 4, 2, 21. H. 495. an. 2, 520. MED. v. 7. जवे यामिर्पुनो अर्चत्तमावतम् RV. 1, 112, 21. VS. 9, 7. आ ते त्वष्टा प्तुसु जवं दधातु 8.9. von Flüssen RV. 10, 114, 9. मनसो जवेषु 71, 8. VS. 22, 8. 23, 3. 30, 11. AV. 4, 27, 3. 36, 5. 10, 2, 15. 19, 60, 2. ÇAT. Br. 5, 4, 2, 10. 13, 1, 2, 7. 4, 2, 2. (यस्य) जवे वायुः (तुल्यः) MBh. 3, 10891. जवपुक्त (अश्व) N. 19, 18. जवमास्थाय वै परम् 21. वातजव adj. (अश्व) 22, 9. मृगं ÇĀK. 8. रथं 9. VARĀH. BṚH. S. 60, 15. 16. 83, 19. Vid. 22. नदीं तीर्त्वा मृकान्जवाम् R. 3, 11, 2. जवेनाभिससार् N. 11, 25. DRAUP. 6, 27. 7, 8. सर्वजवेन KENOP. 19. Vgl. मनोजव. — 2) adj. eilend, rasch AK. 2, 8, 2, 41. H. an. MED. रोचनानि सरीसृपाणि भुवने जवानि (viell. भुवनेजं zu lesen) AV. 19, 7, 1. — 3) f. आ die chinesische Rose AK. 2, 4, 2, 56. TRIK. 3, 3, 277. H. 1147, Sch. H. an. MED. °लौकित्य Sch. zu Kap. 1, 59. जवापीडनिभस्तामो बालसूर्यः R. 5, 3, 48. जवाशोकवनैः MBh. 3, 14537. संध्यारगो जवावर्णः HARIV. 9703. अरूणो गुरुभ्राता जवापुष्पसमप्रभः 12307. संध्याया — जवापुष्पप्रकाशया R. 6, 90, 21. MED. 37. जवापुष्प n. = जवा ÇABDAR. im ÇKDR. Safran H. c. 132. Vgl. जपा.

1. जवन (wie eben) 1) adj. f. ई gaṇa दृढादि zu P. 5, 1, 123. proparox. RV., oxyt. P. 3, 2, 150. a) treibend: शतक्रतुं जवनो सूनृताहृत् RV. 1, 51, 2. — b) schnell, rasch AK. 2, 8, 2, 41. TRIK. 3, 3, 240. H. 494. an. 3, 376. MED. n. 66. अपाणिपादो जवनो प्रकीता (ÇĀM.: जवनः = हृग्गामी) ÇVETĪÇV. Up. 3, 19. जवनो ऽभ्यपततदा (viell. जवेनाभ्यं zu lesen) MBh. 3, 756. हताः R. 2, 68, 3. मृग MBh. 12, 4635. 4637. von Pferden AK. 2, 8, 2, 13. H. 1234. H. an. MED. N. 20, 32. MBh. 2, 1036. 3, 674. 14960. 4, 368. 6, 1727. HARIV. 6640. R. 2, 43, 14. — 2) m. a) Pferd. — b) eine Art Antilope (श्रीकारिन्; hier aber यवन) RĪĀN. im ÇKDR. — c) N.